पंचम अध्याय

प्रमुख पारम्परिक लोक कलाकारों व उभरते लोक कलाकारों का लोकसंगीत के विषय में तुलनात्मक विश्लेषण

पंचम अध्याय

प्रमुख पारम्परिक लोक कलाकारों व उभरते लोक कलाकारों का लोकसंगीत के विषय में तुलनात्मक विश्लेषण

'लोक कलाकार' जो अपनी लोक सांस्कृतिक धरोहर को पूरी तन्मयता के साथ संभालकर एवं संजोकर रखे और शत–प्रतिशत उसकी वास्तविकता को बरकरार रखे वह सच्चा लोक कलाकार कहलाता है। लेकिन आजकल ऐसा नहीं है इससे बिल्कुल विपरीत हो रहा है। आजकल लोक संगीत को कुछ एक उभरते कलाकारों ने पैसा कमाने का साधन बना रखा है और अपनी सांस्कृतिक धरोहर को जैसे कैसे बेचा व परोसा जा रहा है। वह ठीक तरह से लोकसंगीत के महत्व को नहीं जानते। वह लोकसंगीत जो आन्तरिक आवाज़ से उत्पन्न हुआ और शब्दों व स्वरों के मिश्रण से सुसज्जित लोकगीत, लोकध्वनि में परिवर्तित हुआ, अब ऐसा प्रतीत होता है कि वह धीरे–धीरे लुप्त होता जा रहा है।

पारम्परिक लोक कलाकार ऐसे परिवर्तन से अप्रसन्न हैं वहीं उभरते कलाकारों का कहना है कि आजकल का युवा वर्ग लोकगीतों में उस तकनीक के प्रचलन व बदलाव से खुश हैं जिन लोकगीतों, वाद्यों में आधुनिककरण हुआ है। पाश्चात्य संगीत का प्रभाव लोकसंगीत पर साफ दिखाई देता है। इसी का तुलनात्मक परिचय कुछ इस प्रकार है। जहां पारम्परिक लोककलाकार इस परिवर्तन से नाखुश हैं वहीं उभरते लोक कलाकार इस परिवर्तन को ठीक समझते हैं।

पारम्परिक लोक कलाकारों का कहना हैं कि 'लोक संगीत भावनाओं, परम्पराओं, भौगोलिक स्थिति, दृश्य, संस्कृति इन सभी चीज़ों को आधार मानकर उत्पन्न हुआ और संस्कृति का परिवर्तन लोक संगीत पर एक गहरा आघात है लेकिन इसमें रुचि तक ठीक है, जबकि उभरते कलाकारों का मत है कि जो पारम्परिक लोक कलाकारों से सांगीतिक धरोहर हमें मिली है हमने उसे वैसे ही ग्रहण किया लेकिन पाश्चात्य संगीत का प्रभाव इतना है कि उस तरह के पारम्परिक लोकगीत उन्हीं की तरह गायकी आजकल नौजवानों को पसन्द नहीं वह उसमें

पाश्चात्य संगीत की तरह ही बदलाव चाहते हैं तो हमने उन्हीं वाद्यों, गानों में आधुनिकीकरण कर उसे नया आयाम दिलाया उसी बदलाव से आज का युवा वर्ग नाटी (रिमिक्स) पहाड़ी लोकगीत, लोकवाद्यों में रुचि लेने लगा है और अपने लोक संगीत को समझने लगा है।

कुल्लू जिला के श्री चन्द्रमोहन कपूर जी का कहना है 'हम जो परोसते हैं युवा वर्ग वही ग्रहण करता है। कटाक्ष रूप में इन्होंने कहा कि आजकल रिमिक्स का ज़माना है, बिना अर्थ वाले गीत सुनने में अच्छे लगते हैं। वाद्यों में नवीन प्रयोग और नई टैक्नोलोजी सब बढ़िया है लेकिन उसमें लोकसंस्कृति नहीं झलकती। विडियो प्रदर्शन इतना अभद्र है कि लोकसंस्कृति को गल्त ढंग से प्रदर्शित कर लोकनृत्य में 'जीन्स टीशर्ट' का प्रयोग कर नौजवानों को अपनी संस्कृति से गुमराह किया जा रहा है। 'कपूर जी' युवा पीढ़ी को दोष नहीं देते लेकिन इनका कहना है जो भी इसका गल्त प्रदर्शन कर रहा है शायद उसे अपनी सांस्कृतिक धरोहर से प्यार नहीं होगा नहीं तो इस अमूल्य विरासत को नष्ट नहीं होने देता।

लोकगायिका 'गम्भरी देवी' जी कहती हैं हमने लोकसंगीत को उजागर करने का भरपूर प्रयास किया। मेरे बनाए गीत पारम्परिक लोकगीतों का स्थान ले चुके हैं। इन गीतों में प्यार, भाव, रस, गीत की आत्मा, सुन्दर शब्दों का ऐसा मिश्रण है कि गायक पूरी तरह तन्मय होकर उसमें लीन हो जाता है और जनमानस के हृदय को भावविभोर करता है। उभरते लोककलाकारों से मेरी यही विनती है कि उन सुन्दर शब्द रचनाओं की वास्तविकता को पहचाने और उसी तरह से उन गीतों को गांए। आजकल गीत तोड़–मरोड़ कर पेश किए जाते हैं लेकिन उसमें पैसे कमाने की होड़ साफ नज़र आती है और अपने लोकसंगीत से दूर–दूर तक कोई लगाव नहीं लगता।

लोकगायक पं० ज्वाला प्रसाद शर्मा जी का कहना है कि आजकल युवा वर्ग आधुनिक संगीत से बहुत प्रभावित है। नई–नई तकनीकों का प्रयोग संगीत जगत् में दिन–प्रतिदिन हो रहा है जिससे कोई भी जनसाधारण अछूता नहीं रहा है।

'रिमिक्स' ने स्थान ले लिया है और गीतों की जगह नए वाद्यों ने ले ली है। गानों पर वाद्यों का प्रभाव इतना है कि कोई भी अपने आप को अच्छा गायक समझता है क्योंकि वाद्यों की आवाज़ इतनी होती है कि गायक की आवाज़ का पता ही नहीं चलता कि वह क्या गा रहा है। आधुनिकीकरण से संगीत जगत् प्रभावित हो रहा है यह काफी हद तक सही भी है लेकिन वाद्यों का प्रयोग वहीं पर होना चाहिए जहां पर इनकी आवश्यकता है। गीत पर इन वाद्यों का प्रभाव नहीं होना चाहिए। अच्छा गायक तो वह है जो अपने गायन से ही किसी के मन को छू ले और उसकी आवाज़ में ऐसी कशिश हो कि बिना किसी वाद्य के भी ऐसा लगे कि साथ में कोई वाद्य बज रहा है। तो वह सही मायने में कलाकार कहलाने के लायक है। उभरते कलाकारों से इनका यही कहना है कि चाहे वह गायक हो या वादक अपनी कला का प्रभाव वहीं दिखाएं जहां उसकी जरूरत है यानि जहां पर गायन दिखाना है वहां सिर्फ गाएं उसमें वाद्यों का प्रभाव कम होना चाहिए तभी हम अपनी इस पारम्परिक धरोहर को सुरक्षित रख सकते हैं।

लोक गायक अच्छर सिंह परमार जी का कहना है कि लोक संगीत को बचाने के लिए तथा उसका सही स्वरूप कायम रखने के लिए हमें प्रयास करना चाहिए। आजकल लोकगीतों के नाम पर अश्लील शब्दों का प्रयोग हमारे लोक संगीत को नष्ट कर रहा है। उसको उसी पारम्परिक रूप में गाना और लोकवाद्यों को बजाना ही लोक संगीत को बचाये रखने का सही कदम होगा। उसमें आधुनिकता का पर्दापण हमारी लोक संस्कृति को खत्म कर रहा है, इसे बचाये रखने का हम सभी को प्रयास करना चाहिए और नवीनता लाने का प्रयास कुछ हद तक सही है यदि उस पर नये वाद्यों को थोपा जायेगा तो हमारा लोकसंगीत लुप्त हो जायेगा। श्री परमार जी का कहना है कि पूर्वजों द्वारा मिली इस अमूल्य सम्पत्ति को बचाने का प्रयास सभी को करना चाहिए।

लोक गायक अमर सिंह चौहान जी का कहना है कि आधुनिकीकरण के चलते आज के समय की वह प्रत्येक वाद्य यंत्र है जो मनोरंजन के लिए बने हैं, लेकिन इनका मानना यही है जो रस उस समय के गीतों में था वह अब कहीं नहीं

देखने व सुनने को मिलता। लोक संगीत में काफी बदलाव आ गया है। यह कहते हैं कि लोक गीतों का जो बहुमूल्य खजाना है उसे नौजवान कलाकार भी उसी तरह अपनी सांस्कृतिक धरोहर को संजोकर रखे और उनके मूल्य को पहचाने।

लोक वादक श्री दाखर दास जी कहते हैं कि लोकसंगीत में हो रहे बदलाव को पश्चिमी सभ्यता का अनुसरण करना व टी० वी० आदि पर गीतों, वाद्यों का आधुनिककरण को जिम्मेवार मानते हैं। इनका कहना है कि लोकसंगीत के महत्व को पहचानना, ग्रामीण क्षेत्रों में पंजीकृत युवक मण्डलों की अधिक से अधिक संख्या में स्थापना और सरकार द्वारा लोककलाकारों को आर्थिक सहायतानुदान आदि। यह कहते हैं कि ऐसे कलाकार जिनके पास लोकगीतों वाद्ययन्त्रों को बजाने की प्राचीन शैली है हमारे कबाईली क्षेत्रों से लुप्त होती जा रही है। यदि आधुनिकता का इतना प्रभाव रहा तो आने वाले 10–15 वर्षों में यह लोककलाकार लुप्त हो जाएगें। मैंने जो कुछ भी ज्ञान जहां कहीं से भी प्राप्त किया उन्हें अपने शिष्यों को दिया अब अपनी इस अमूल्य विरासत को बचाना इनका कर्त्तव्य है। कलाकार को अपना सही स्थान मिल जाए तो किसी और चीज़ की लालसा नहीं होती।

इसी प्रकार पण्डित ज्वाला प्रसाद शर्मा, श्री अच्छर सिंह परमार, श्री कृष्ण लाल सहगल, स्वयं श्री चन्द्र मोहन कपूर जी, इन सभी पारम्परिक लोक कलाकारों का मानना है कि समय के साथ परिवर्तन सभी को अच्छा लगता है, लेकिन उसका सही ढंग से प्रदर्शन अपनी लोकसंस्कृति को पूर्णतः प्रकट करना, परिधानों व आभूषणों व लोकगीतों का सही प्रदर्शन ही हमारी इस लोक सांस्कृतिक धरोहर को बचा सकता है।

लेकिन उभरते कलाकारों में कुलदीप शर्मा, सुरेश चौहान, राठी, नीरु चांदनी और भी कई कलाकारों का कहना है 'पारम्परिक लोक संगीत' खुली गायिकी है अनिबद्ध रूप में उसे ताल रहित जैसे कैसे गाया जाता था लेकिन उन्हीं की वास्तविकता बरकरार रखते हुए तालबद्ध रूप में उसका प्रचलन सही साबित हुआ और दर्शकों को बहुत लुभाया। उन्हीं अनिबद्ध गीतों को तालबद्ध, स्वरबद्ध रूप में गानों को सही दिशा मिली और लोक संगीत को आजकल एक नया आयाम मिला

जो पारम्परिक लोक संगीत व लोक कलाकारों को नहीं मिला। म्यूजिक डॉरेक्टर पम्मी, गोल्डी का कहना है कि अच्छे म्यूजिक से ही उन गीतों को पहचान बना पाई है जिनको केवल पारम्परिक कलाकार कुछ समारोहों में ही पहचान मिल पाई और उभरते कलाकारों ने आधुनिक तकनीक का प्रयोग कर उसे और भी लोकप्रिय कर दिया और जनमानस के मन में रचा बसा दिया।

इन उभरते कलाकारों का कहना है कि आज सही मायने में लोक कलाकारों और अपने लोक संगीत (जिसमें गायन, वाद्य, नृत्य) को नए तकनीकीकरण और ओडियो, विडियो के प्रदर्शन से पहचान मिल पाई है। आज के नौजवान वैसे तो पहाड़ी लोकगीत सुनना पसन्द ही नहीं करते लेकिन नवीनीकरण ने उन्हें अपनी ओर आकर्षित करना शुरू कर दिया है और वह अपने लोक संगीत मे रुचि लेने लगे हैं। इसलिए *उभरते लोक कलाकारों का और पारम्परिक लोक कलाकारों का यह तुलनात्मक विश्लेषण इस निर्णय पर पहुंचा कि लोकसंगीत, लोकसंस्कृति की वास्तविकता को बरकरार रखते हुए गीतों व नृत्यों का सही प्रदर्शन और उसमें नवीनीकरण काफी हद तक सही है।*